उत्तर

10 प्रीलिम्स 1 हिंदी ब

Class 10 - हिंदी ब

खंड क - अपठित बोध

1. 1. (ग) स्वतंत्रता आन्दोलन के नेताओं में सबसे बड़े और आदरणीय महात्मा गांधी जी थे जिन्हे हजारी प्रसाद द्विवेदी ने सबसे बूढ़ा कह कर संबोधित किया है।
   2. (क) गद्यांश में मनमानापन पशुओं का गुण माना गया है क्योंकि पशुओं में संयम और संतोष जैसे गुणों का अभाव होता है शायद इसीलिए उन्हें नियंत्रित करने की आवश्यकता होती है।
   3. (क) जब तक मनुष्य के मन में संतोष नहीं होगा तब तक वह सुखी नहीं हो सकता। अतः हमें स्वयं पर संयम और नियंत्रण रखना चाहिए। संतोष से ही सुख की उत्पत्ति होती है।
   4. गाँधी जी ने लोगों को सत्य और अहिंसा का मार्ग दिखाया। लोगों को यह मार्ग बहुत पसंद आया और वे निडर होकर उसका अनुसरण करने लगे जब कि कुछ लोगों ने इसका विरोध भी किया।
   5. गाँधीजी के अनुसार पूरे मन से सत्य और अहिंसा को जीवन में अपनाकर उस पर चलने वाले मनुष्यों का जीवन सार्थक हो सकता है। गाँधीजी के बताए रास्ते को अपने जीवन में उतारना मनुष्यता का पर्याय है।
2. 1. (ग) जब हम प्रकृति की सीमा का अतिक्रमण करते हैं तो उसका तांडव देखने को मिलता है मानव प्रकृति की विनाशलीला के समक्ष अपने आप को विवश पाता है और प्रकृति की ताकत के सामने मानव बौना जान पड़ता है।
   2. (ख) प्रकृति के अनुशासन तोड़ने का परिणाम हमारे सामने भारी तबाही के परिदृश्य के रूप में प्रकट होता है जिस पर नियंत्रण असंभव होता है।
   3. (क) निरंतर प्रवाह
   4. जब इंसान ने खुद को जीवन देने वाले प्रकृति प्रदत्त उपहारों, जैसे-जल, जंगल और जमीन का शोषण जोंक की भाँति करने की कोशिश की, अर्थात जब हम स्वार्थवश अतिदोहन की प्रक्रिया को अंज़ाम देते हैं तब चेतावनी के रूप में प्रकृति के अनेक रंग देखने को मिले हैं।
   5. इस गद्यांश के माध्यम से लेखक ने यह संदेश दिया है कि हम अपने अधिकाधिक लाभ कमाने के पुराने रवैए को छोड़कर अपने आचरण में यथोचित सुधार करना होगा ।हमें प्रकृति की सीमा का अतिक्रमण नहीं करना चाहिए अन्यथा हमें गंभीर प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ेगा।

खंड ख - व्यावहारिक व्याकरण

3. i. संज्ञा पदबंध
   ii. सबकी सहायता करने वाले आप
   iii. बना लिया था
   iv. क्रिया पदबंध
   v. खेलते-कूदते
4. i. वह लड़का गाँव गया और बीमार हो गया।
   ii. उसके स्टेशन पहुँचते ही गाड़ी चल पड़ी।
   iii. जो लड़का रेस में प्रथम आया उसे पुरस्कार मिला।
   iv. हरभजन सिंह ने पहले ओवर की पहली गेंद फेंकी और जयसूर्या आउट हो गया।
   v. वालेंटियर वहाँ गए थे और लाठियाँ पड़ने पर भी वे अपने स्थान से हटते नहीं थे।
5. i. यथामत - मत के अनुसार (जैसा मत हो) (अव्ययीभाव समास)
   ii. महादेव - महान है जो देव - (कर्मधारय समास)
   महादेव - देव है महान जिसका अर्थात भगवान शंकर जी - (बहुव्रीहि समास)
   iii. वन में वास = वनवास (सप्तमी /अधिकरण तत्पुरुष समास)
   iv. गुण और दोष = गुण-दोष (द्वंद्व समास)
   v. नीलीगाय = नीलगाय (कर्मधारय समास) (विशेषण विशेष्य का संबंध)
6. i. हाथ पाँव फूल जाना: जब वह पहली बार भाषण देने के लिए मंच पर गया, तो उसके हाथ पाँव फूल गए।
   ii. प्राणांतक परिश्रम करना: उसने परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए प्राणांतक परिश्रम किया।
   iii. सिर पर तलवार लटकना: जब महेश को पता चला कि उसकी नौकरी खतरे में है, तो उसे लगा जैसे उसके सिर पर तलवार लटक रही है।
   iv. सपनों के महल बनाना: सोहना तो बचपन से ही सपनों के महल बनाती रही है।
   v. आग बबूला होना - जब उसने देखा कि उसकी पत्नी ने उसे धोखा दिया है तो वह आग बबूला हो गया।

खंड ग - गद्य खंड (पाठ्यपुस्तक)

7. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

मैं तुमसे पाँच साल बड़ा हूँ और चाहे आज तुम मेरी ही जमात में आ जाओ और परीक्षकों का यही हाल है, तो निस्संदेह अगले साल तुम मेरे समकक्ष हो जाओगे और शायद एक साल बाद मुझसे आगे भी निकल जाओ, लेकिन मुझमें और तुममें जो पाँच साल का अंतर है, उसे तुम क्या, खुदा भी नहीं मिटा सकता। मैं तुमसे पाँच साल बड़ा हूँ और हमेशा रहूँगा। मुझे दुनिया का और जिंदगी का जो तजुरबा है, तुम उसकी बराबरी नहीं कर सकते, चाहे तुम एम.ए. और डी. फिल् और डी.लिट् ही क्यों न हो जाओ। समझ किताबें पढ़ने से नहीं आती, दुनिया देखने से आती है। हमारी अम्माँ ने कोई दरजा नहीं पास किया

और दादा भी शायद पाँचवीं-छठी जमात के आगे नहीं गए, लेकिन हम दोनों चाहे सारी दुनिया की विद्या पढ़ लें, अम्माँ और दादा को हमें समझाने और सुधारने का अधिकार हमेशा रहेगा। केवल इसलिए नहीं कि वे हमारे जन्मदाता हैं, बल्कि इसलिए कि उन्हें दुनिया का हमसे ज़्यादा तजुरबा है और रहेगा।

(i) **(घ)** बड़ों का अनुभव छोटो के लिए फायदेमंद है
व्याख्या:
बड़ों का अनुभव छोटो के लिए फायदेमंद है

(ii) **(घ)** दुनिया को समझने से
व्याख्या:
दुनिया को समझने से

(iii) **(ग)** क्योंकि उनके पास अधिक तजुर्बा है
व्याख्या:
क्योंकि उनके पास अधिक तजुर्बा है

(iv) **(ग)** पाँच साल
व्याख्या:
पाँच साल

(v) **(ख)** क्योंकि बड़े भाई उम्र में पाँच साल बड़े हैं
व्याख्या:
क्योंकि बड़े भाई उम्र में पाँच साल बड़े हैं

8. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में दीजिए:

(i) स्वतंत्रता आंदोलन के प्रति देशवासियों में गजब का जोश और उत्साह था, जिसे सुभाष चंद्र बोस के नेतृत्व में जुलूस और धरना प्रदर्शन के रूप में देखा गया। हालांकि पुलिस द्वारा जारी किए गए नोटिस के बावजूद, सभा का आयोजन जारी रहा। स्त्रियों ने भी इस आंदोलन में सक्रिय भाग लिया; उन्होंने जुलूस निकाले, झंडा फहराया और मोनुमेंट की सीढ़ियों पर झंडा लगाने का प्रयास किया। इसके जवाब में, अंग्रेज़ी सत्ता ने आंदोलनकारियों पर विभिन्न धाराएँ लगाकर उन्हें गिरफ्तार किया और प्रदर्शनकारियों पर भयानक लाठी चार्ज किया, जिससे कई लोग घायल हुए और सिर फटे। महिलाओं को भी नहीं बख्शा गया और उन्हें गिरफ्तार कर जेल भेजा गया। इस प्रकार, स्वतंत्रता आंदोलन को दबाने के लिए अंग्रेज़ी सत्ता की क्रूरता ने आंदोलनकारियों के साहस और दृढ़ता को और भी उजागर किया।

(ii) आदर्शवादी लोग आदर्श को बनाए रखते हैं। वे समाज के शाश्वत मूल्यों की रक्षा करते हैं। उन्होंने ही समाज के दूसरे लोगों की उन्नति में योगदान दिया है। 'गिन्नी का सोना' पाठ के आधार पर गांधी जी ने आदर्शों को व्यावहारिकता के स्तर पर उतरने नहीं दिया बल्कि व्यावहारिकता को आदर्श के स्तर पर चढ़ाते रहे तभी तो उन्होंने भारतीय जन-मानस का नेतृत्व किया।

(iii) पाठ के अनुसार लेफ्टिनेंट व्यक्तिगत स्तर पर वजीर अली को बहादुर मानता था क्योंकि एक अकेले इंसान ने अपनी बहादुरी और दिलेरी के दम पर ब्रिटिश कंपनी कि पूरी एक फौज की नाक में दम कर दिया था | फिर भी वो इनके हाथ नहीं आ रहा था ।

(iv) 'तीसरी कसम' फ़िल्म में दुख के भाव को सहज स्थिति में प्रकट किया गया है। इस फ़िल्म में दुखों को जीवन के सापेक्ष रूप में प्रस्तुत किया है। दुख के वीभत्स रूप से यह सर्वथा भिन्न है क्योंकि यहाँ दुखों से घबराकर लोग पीठ नहीं दिखाते। दुखों से हमें घबराना नहीं चाहिए। दुखों का साहसपूर्वक सामना करना चाहिए। दुख के इस रूप को देखकर मनुष्य 'व्यथा' व 'करुणा' को सकारात्मक ढंग से स्वीकार करता है। वह दुखों से परास्त नहीं होता, निराश नहीं होता। इस फ़िल्म में दुख की सहज स्थिति लोगों को आशावादी बनाती है।

खंड ग - काव्य खंड (पाठ्यपुस्तक)

9. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

अनंत अंतरिक्ष में अनंत देव हैं खड़े,
समक्ष ही स्वबाहु जो बढ़ा रहे बड़े-बड़े।
परस्परावलंब से उठो तथा बढ़ो सभी,
अभी अमर्त्य-अंक में अपंक हो चढ़ो सभी।
रहो न यों कि एक से न काम और का सरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

(i) **(घ)** देवता
व्याख्या:
देवता

(ii) **(ख)** मदद के लिए
व्याख्या:
मदद के लिए

(iii) **(क)** सहयोग की भावना से
व्याख्या:
सहयोग की भावना से

(iv) **(ख)** एक-दूसरे का सहयोग लेना या देना
व्याख्या:
एक-दूसरे का सहयोग लेना या देना

(v) **(घ)** परोपकारी लोगों की प्रशंसा करने के लिए
व्याख्या:
परोपकारी लोगों की प्रशंसा करने के लिए

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में दीजिए:

(i) कृष्ण की चाकरी करने से मीरा को तीन लाभ मिलेंगे, अर्थात् उनकी तीन इच्छाएँ पूरी होगी। उनकी पहली इच्छा यह है कि श्रीकृष्ण के लिए बाग लगाएंगी जिसमें विचरण करने के लिए हर दिन कृष्ण आएंगे तो वह उनके हर दिन दर्शन प्राप्त करेगी । उनकी दूसरी इच्छा यह है कि वह वृंदावन की गलियों में कृष्ण की लीलाओं का यशोगान करें, जिससे वह हर क्षण कृष्ण को स्मरण कर पाएगी।
उनकी तीसरी इच्छा यह है कि वह कृष्ण की दासी बनकर उनकी सेवा कर पाएगी। जिससे उसे श्रीकृष्ण की भक्ति रूपी जागीरी प्राप्त हो जाएगी। अपनी इन्हीं तीन इच्छाओं (सेवा, दर्शन तथा स्मरण) को उन्होंने अपने तीन लाभ बताए हैं।

(ii) कवि कहता है कि बादल रूपी विमान में सवार इन्द्र आकाश में इस प्रकार घूम रहा है जैसे कोई जादूगर अपना खेल दिखा रहा हो। कहीं बादलों का समूह पहाड़ों को छिपा रहा है तो कहीं गहरे कोहरे के कारण ऐसा प्रतीत होता है कि तालाब से धुआँ उठ रहा है। ये सभी दृश्य जादू के समान प्रतीत होते हैं।

(iii) प्रस्तुत कविता में कवि ने सैनिकों को राम-लक्ष्मण जैसा बनने के लिए इसलिए कहा है क्योंकि वह चाहता है कि सैनिक भी अपने खून से इस धरती पर एक ऐसी लक्ष्मण रेखा खींच दें ताकि यह धरती सुरक्षित हो जाए और जिस प्रकार राम-लक्ष्मण ने सीता की रक्षा कर अपना क्षत्रिय धर्म निभाया था उसी प्रकार उन्हें भी शत्रुओं से अपनी भारतमाता की रक्षा कर देशभक्त होने का कर्तव्य निभाना है।

(iv) कविता के अनुसार सुख के दिनों सामान्य इंसान सुख देने वाले को भूल अपनी ही दुनिया में मगन रहता है। वह ईश्वर को भूलकर अपनी जिंदगी में व्यस्त हो जाता है। वही ठीक इसके विपरीत कवि सुख के दिनों को ईश्वर की कृपा के कारण मिला हुआ मानता है। वह इतनी प्रार्थना करता है कि वह प्रभु को पल भर भी न भूले और सुख में भी उसका सिर ईश्वर के समक्ष झुका रहे।

खंड ग - संचयन (पूरक पाठ्यपुस्तक)

11. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में दीजिए:

(i) रिश्ते अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। ये हमें परिवार, समाज, राष्ट्र से जोड़ते हैं। रिश्तों के अभाव में परिवार, समाज और राष्ट्र जैसी संस्थाओं की कल्पना भी नहीं की जा सकती। रिश्तों में ही व्यक्ति को संतुष्टि, सुख-आनंद् प्राप्त होता है। रिश्तों के अभाव में तो व्यक्ति एकाकी होकर जीवन से दूर हो जाता है। एक पत्रकार के रूप में हरिहर काका के बारे में अपने समाचार पत्र को सूचित किया जाएगा कि धन की लालसा में उसके सगे संबंधी उसे परेशान कर रहे हैं। अपने समाचार पत्र में समाज की शीर्ष संस्था के पुरोधा महंत के चरित्र के बारे में विस्तार विवरण देना चाहूँगा। धन केंद्रित मानसिकता से समाज को बचाने के लिए लोगों को अपनत्व व सौहार्द्र से भरे सामाजिक जीवन जीने के लाभ से परिचित करवाना होगा। इसके लिए नुक्कड़ नाटक के आयोजन तथा टी.वी. आदि पर घर-घर की कलह आदि को दिखाने के स्थान पर प्रेम, सौहाई व भाईचारे की भावना से ओतप्रोत धारावाहिकों का प्रसारण किया जाना चाहिए लोग जागरूक हों और अपनत्व के महत्व को समझते हुए अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन कर सके।

(ii) लेखक गुरुदयाल और उनके साथियों को स्कूल जाना पसंद नहीं था पर स्काउट परेड वाला दिन उन्हें बहुत अच्छा लगता था। उस समय परेड करते समय उनके अंदर आत्मविश्वास और जोश भर जाता था। उन्हें लगता था कि वे सचमुच फौजी जवान बन गए हैं।
हमें विद्यालय जाना बहुत पसंद है क्योंकि वहाँ हमारा सर्वांगीण विकास होता है। पढ़ाई के साथ-साथ खेलकूद, व्यायाम, संगीत, नृत्य आदि अनेक गतिविधियाँ हमारे विद्यालय में होती हैं जो हमारे सम्पूर्ण विकास में सहायक हैं इसलिए हमें किसी दिन की अपेक्षा प्रतिदिन विद्यालय जाना पसंद है।

(iii) सच्चा मित्र जीवन की अनुपम निधि होता है। वह जीवन के हर अच्छे-बुरे समय में साथ देता है, विशेषकर विपत्ति के समय तो वह हमारा सहयोग एवं समर्थन सच्चे दिल से करता है। टोपी शुक्ला तथा इफ़्फन भी सच्चे मित्र हैं। वे दोनों एक-दूसरे को धर्म, जाति, संप्रदाय आदि से ऊपर उठकर प्रेम करते हैं। दोनों के बीच मित्रता इतनी गहरी है कि इफ़्फन के चले जाने पर टोपी स्वयं को अत्यंत अकेला महसूस करता है। वह इफ़्फन तथा उसकी दादी को हृदय से चाहता था, इसीलिए इफ़्फन के पिता के तबादले के कारण उसके चले जाने पर वह बहुत अधिक मायूस हो जाता है और कसम खाता है कि अब वह ऐसे किसी लड़के से दोस्ती नहीं करेगा, जिसके पिता जी की तबादले वाली नौकरी हो। इन दोनों की दोस्ती से सच्ची मित्रता की प्रेरणा ली जा सकती है।

खंड घ - रचनात्मक लेखन

12. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में अनुच्छेद लिखिये:

(i) समाज में, नारी के माँ, प्रेयसी, पुत्री, पत्नी अनेक रूप हैं। सम परिस्थितियों में वह देवी है तो विषम परिस्थितियों में दुर्गा-भवानी। नाना रूपों में मानव जीवन को प्रभावित करने वाली नारी समाज रूपी गाड़ी का एक पहिया है जिसके बना समग्र समाज पंगु हैं।
मानव जाति के इतिहास पर विचार करें तो ज्ञात होगा कि सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, साहित्यिक, धार्मिक आदि सभी क्षेत्रों में प्रारम्भ से ही नारी की अपेक्षा पुरुष का आधिपत्य रहा है। उसने नारी की स्वतन्त्रता छीनकर उसे पराधीन बना दिया। पुरुष प्रधान समाज से नारी के मन मस्तिष्क में यह बात अच्छी तरह जमा दी कि वह असहाय, हीन और अबला है किन्तु वर्तमान समय में नारी ने स्वयं को जगाया, ऊपर उठाया, संघर्ष का संबल प्राप्त किया। स्वयं को शिक्षित करके अपने जीवन को प्रत्येक परिस्थिति का मसाना करने के योग्य बनाया। आज की नारी अबला न रहकर सबला है।
वह पूरी तरह आत्मनिर्भर रहकर परिवार, समाज तथा राष्ट्र की प्रगति में योगदान दे रही है। वर्तमान युग में नारी शिक्षा, प्रशासन, चिकित्सा, सुरक्षा, राजनीति, विज्ञान, खेलकूद हर दिशा में आगे आ रही है।

नारी-जीवन के विकास पर आज समाज गर्व करता है। समाज के हर कार्य, हर क्षेत्र में आज पुरुष के समान नारी के महत्व को स्वीकार किया जा रहा है।

(ii) **परहित सरिस धर्म नहिं भाई अथवा परोपकार**

गोस्वामी तुलसीदास ने कहा है कि
परहित सरिस धर्म नहिं भाई।
परपीड़ा सम नहिं अधमाई।।

अर्थात् परहित (परोपकार) के समान दूसरा कोई धर्म नहीं है और दूसरों को पीड़ा (कष्ट) देने के समान कोई अन्य नीचता या नीच कर्म नहीं है। पुराणों में भी कहा गया है, 'परोपकारः पुण्याय पापाय परपीड़नम्' अर्थात् दूसरों का उपकार करना सबसे बड़ा पुण्य तथा दूसरों को कष्ट पहुँचाना सबसे बड़ा पाप है।

परोपकार की भावना से शून्य मनुष्य पशु तुल्य होता है, जो केवल अपने स्वार्थों की पूर्ति तक ही स्वयं को सीमित रखता है। मनुष्य जीवन बेहतर है, क्योंकि मनुष्य के पास विवेक है। उसमें दूसरों की भावनाओं एवं आवश्यकताओं को समझने तथा उसकी पूर्ति करने की समझ है। इसी कारण मनुष्य सर्वश्रेष्ठ प्राणी है।

इस दुनिया में महात्मा बुद्ध, ईसा मसीह, दधीचि ऋषि, अब्राहम लिंकन, मदर टेरेसा, बाबा आम्टे जैसे अनगिनत महापुरुषों के जीवन का उद्देश्य परोपकार ही था। परोपकार ही वह गुण है जिसके कारण प्रभु ईसा मसीह सूली पर चढ़े, गाँधी जी ने गोली खाई तथा गुरु गोविंद सिंह जी ने अपने सम्मुख अपने बच्चों को दीवार में चुनते हुए देखा । भारतीय संस्कृति में भी इस तथ्य को रेखांकित किया गया है कि मनुष्य को उस प्रकृति से प्रेरणा लेनी चाहिए, जिसके कण-कण में परोपकार की भावना व्याप्त है। भारतीय संस्कृति में इसी भावना के कारण पूरी पृथ्वी को एक कुटुंब माना गया है तथा विश्व को परोपकार संबंधी संदेश दिया गया है। इसमें सभी जीवों के सुख की कामना की गई है।

(iii) आजकल की दुनिया में इंटरनेट ने हमारे जीवन को अद्वितीय तरीके से प्रभावित किया है। इसे तकनीक का एक अद्वितीय वरदान माना जा सकता है। इंटरनेट ने हमें एक नई दुनिया की ओर ले जाया है, जिसमें हम सूचनाओं की खान से जुड़ सकते हैं और जानकारी का बहुत सारा स्रोत है। इसके बिना हमारा जीवन सोचने के लिए अधूरा हो जाता।

इंटरनेट ने सूचनाओं की खान को एक सच्ची क्रांति का संकेत दिया है। पहले, सूचनाओं को प्राप्त करने के लिए हमें पुस्तकें और समाचार पत्रिकाएँ ही उपलब्ध थीं, लेकिन अब हम इंटरनेट के माध्यम से जिस तरीके से सूचनाओं की खान से जुड़ सकते हैं, वह अद्भुत है। हम गूगल और अन्य खोज इंजन्स का उपयोग करके किसी भी विषय पर तुरंत जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। यह एक महत्वपूर्ण तरीका है जिससे हम अपने ज्ञान को बढ़ा सकते हैं और समय की बचत कर सकते हैं।

इंटरनेट से हमें अनगिनत सूचना स्रोत मिलते हैं। हम विभिन्न वेबसाइट्स, वेब पोर्टल्स, ब्लॉग, सोशल मीडिया, और अन्य स्रोतों से सूचनाएं प्राप्त कर सकते हैं। यहाँ तक कि हम अपनी रुचि और आवश्यकताओं के हिसाब से विशेष तरीके से समाचार और जानकारी तक पहुँच सकते हैं। इससे हमारा ज्ञान बढ़ता है और हम अपनी रुचियों के हिसाब से जानकारी चुन सकते हैं।

इंटरनेट के आगमन के साथ हमें सजगता और विवेकपूर्णता की आवश्यकता हो गई है। इंटरनेट पर आपको अनगिनत जानकारी मिलती है, लेकिन यह भी असत्य और दुर्भाग्यपूर्ण जानकारी से भरा हो सकता है। इसलिए हमें सच्चाई की पुष्टि करने के लिए और सही जानकारी प्राप्त करने के लिए सजग रहना चाहिए। हमें जानकारी के स्रोत की पुष्टि करनी चाहिए और अपने सोचने की क्षमता का प्रयोग करना चाहिए ताकि हम सही और सत्य की ओर बढ़ सकें।

13. सेवा में
संपादक
नव भारत टाइम्स
नई दिल्ली
विषय- स्वरचित कविता प्रकाशित करवाने हेतु
महोदय,
आप के लोकप्रिय समाचार पत्र के रविवारीय स्तंभ में नवोदित रचनाकारों की रचनाएँ पढ़कर मैं बहुत प्रभावित एवं प्रेरित हुई। बाल्यकाल से ही मेरी अभिरुचि कविता लेखन में रही है। प्राकृतिक सौदर्य के साथ-साथ ज्वलंत विषयों पर रचनाएँ लिखना मेरा शौक रहा है। इसी उद्देश्य से नारी शक्ति को दर्शाती एक कविता मैंने लिखी है जो मैं इस पत्र के साथ संलग्न कर आपको भेज रही हूँ। आपके लोकप्रिय समाचारपत्र के माध्यम से मैं अपनी कविता पाठकों तक पहुँचाना चाहती हूँ।
अतः आपसे अनुरोध है कि अपने समाचार पत्र में मेरी रचना को स्थान देकर कृतार्थ करें। इसके लिए मैं सदैव आपकी आभारी रहूँगी।
धन्यवाद सहित
निवेदिका
गिरीश कुमार स्वामी
म.सं. P-276, पॉकेट-ए,
गोविंग नगर, नई दिल्ली
दिनाँक 24, अगस्त 2020

अथवा

सेवा में,
मुख्य अभियन्ता,
बी. एस. ई. एस.,
राजधानी पावर लिमिटेड,

For any Inquires : 8888577776 | 9762322061

मथुरा (उ०प्र०)।
दिनांक .....
विषय - बिजली की अनियमित आपूर्ति के सम्बन्ध में।
महोदय,
इस पत्र के माध्यम से मैं आपका ध्यान अपने इलाके में बिजली संकट से उत्पन्न कठिनाइयों की ओर दिलाना चाहता हूँ। आजकल हमारी दसवी बोर्ड की परीक्षाएँ चल रही हैं। ऐसी स्थिति में बार-बार बिजली चले जाने से हम छात्रों को पढ़ाई करने में बहुत परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। बिजली की इस आँख-मिचौली से हम छात्रों की पढ़ाई में व्यवधान पड़ता है, इसका हमारे परीक्षा परिणाम पर भी बुरा प्रभाव पड़ेगा। न बिजली जाने की कोई निश्चित समय की निरंतरता है न बिजली आने की। जब भी हम छात्रों के पढ़ने का समय होता है तो बिजली चली जाती है या बहुत कम वोल्ट में आती है।
आपसे अनुरोध है कि हम छात्रों के हित को ध्यान में रखते हुए इस इलाके में बिजली की नियमित आपूर्ति की व्यवस्था करने का निर्देश संबंधित अधिकारियों को दें। हम आपके अनुगृहीत होंगे।
धन्यवाद।
भवदीय,
राहुल

14.

बसंत पब्लिक स्कूल, दिल्ली
सूचना

दिनांक: 20 अगस्त, 20
चित्रकला का आयोजन
विद्यालय के सभी छात्र-छात्राओं को सूचित किया जाता है कि 25 अगस्त को दोपहर 2:00 बजे से हमारे विद्यालय के खेल मैदान में चित्रकला का आयोजन किया जाएगा। विद्यालय के सभी शिक्षकों एवं विद्यार्थियों से आग्रह है कि वह इस समारोह में अवश्य उपस्थित हो। जिससे यह प्रतियोगिता सफल हो सके।
आज्ञा से
गिरीश सिंह राठौर
विद्यालय सचिव

अथवा

बसंत पब्लिक स्कूल
सूचना

दिनांक: 20 जनवरी 2020

"कथा प्रस्तुति कार्यक्रम"

विद्यालय के सभी विद्यार्थियों को सहर्ष सूचित किया जाता है कि आगामी पन्द्रह दिन बाद दिनांक 15 जनवरी, 2020 सोमवार का प्रातः 9:00 से 12:00 बजे तक कथा प्रस्तुति कार्यक्रम रखा गया है यह कार्यक्रम हिन्दी विभाग के संयोजन से शुरू होगा। इसमें सभी की उपस्थिति गरिमापूर्ण है।
आज्ञा से संयोजक हिन्दी विभाग

15.

"सुनहरा अवसर! आपके लिए उपलब्ध है दो कमरों वाला आकर्षक फ़्लैट किराए पर।
सुनसान नहीं, सुविधाओं से भरपूर! विश्वसनीय समुदाय में, शांत और सुरक्षित माहौल में रहने का यह अवसर न गवाएं।
अभी कॉल करें और अपने सपनों का एक नया घर पाएं!"
नीचे दिए नंबर पर संपर्क करें...
895412XXXX

अथवा

सरस्वती शिक्षा सदन

अपने वार्षिकोत्सव के शुभ अवसर पर प्रस्तुत करता है

हस्त शिल्प कला प्रदर्शनी

अतुल सहारिया

विद्यार्थियों द्वारा निर्मित श्रेष्ठ वस्तुएँ
रंग-बिरंगे फूल, आकर्षक चित्रकारी, मोमबत्तियाँ ऊनी वस्त्र, सजावटी समान, दीए, रंगोली ईको फ्रेंडली रंग आदि
स्थान : विद्यालय प्रांगण समय : प्रातः 11 से 4 दिनांक : 13 मार्च 20XX
नोट : प्रदर्शनी से प्राप्त धन का उपयोग निर्धन छात्रों की सहायता हेतु किया जायेगा।

16. From: pawan@mycbseguide.com
To: pccfgnctd@gmail.com
CC ...
BCC ...
विषय - वृक्षों की अवैध कटाई के संबंध में
महोदय,
मैं आपका ध्यान अपने मोहल्ले वैशाली नगर की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ। इस मोहल्ले से कुछ दूरी पर हरा-भरा बाग था। बाग के पास से एक कच्चा रास्ता आगे जाकर मुख्य सड़क पर मिलता था। इसी रास्ते को चौड़ा करने के नाम पर इस बाग तथा आसपास के क्षेत्रों में उन हरे-भरे पेड़ों को काटा जा रहा है जो कि यहाँ के पर्यावरण के लिए घातक है। इन पेड़ों को न काटा जाता तब भी पर्याप्त चौड़ी सड़क बन जाती, किंतु कुछ ठेकेदार किस्म के लोग इन पेड़ों के दुश्मन बने हुए हैं।
आपसे विनम्र प्रार्थना है कि पेड़ों की अनियंत्रित कटाई रोकने के लिए व्यक्तिगत रूप से हस्तक्षेप करने की कृपा करें। हम क्षेत्रवासी आपके आभारी रहेंगे।
पवन

अथवा

एक नदी का दुख

मैं एक नदी हूँ। मैं सारे संसार के लिए बहुत आवश्यक हूँ क्योंकि मैं पानी का एक स्रोत हूँ और जीवन में पानी बहुत अमूल्य धरोहर है। सभी को मेरी जरूरत है चाहे वो मनुष्य हो चाहे पेड़, पौधें और खेत हों। मैं हर जगह पर मौजूद हूँ, लेकिन अलग अलग नामों से जानी जाती हूँ। एक समय था जब मैं पूरी तरह स्वच्छ और निर्मल हुआ करती थी और एक आज का समय है जब मैं गंदगी से भर दी गई हूँ। मानव ने कूड़ा-कचरा डाल कर मेरे जल को हानिकारक बना दिया है। इंसान ने अपने जरूरत के समय मेरा उपयोग किया और अब मुझे एक कचरे का ढेर बना दिया गया है।
इसका नुकसान मेरे जल में रहने वाले जीवों के साथ पूरे संसार को है। लेकिन मैं अपना यह दुख किसी से नहीं कह सकती हूँ।

अतुल ट्यूटोरियल